13

यीशु की परीक्षा

मत्ती 4:1–11, एक निकट दृष्टि

अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ करने से थोड़ा पहले, शत्रु से यीशु का सामना अपनी परीक्षा की सबसे बड़ी उलझन में हुआ।[1] बुराई अपनी पूरी सामर्थ और आतंक के साथ उसके आगे आई। उस पर इससे पहले इतना बड़ा हमला नहीं हुआ था और न दोबारा होना था। यह अध्ययन यीशु की परीक्षा पर ही है।[2]

पृष्ठभूमि बताकर हमें परीक्षा के तीनों पहलुओं को दिखाना आवश्यक है। हम इन बातों पर विचार करेंगे ...

(1) *स्थान:* स्थान जंगल था। युद्ध के मैदान के रूप में मानवीय सहानुभूति से दूर[3] सुनसान जगह का चयन किया गया था। यहां ऊपरी सजावट उतार दी गई थी और परीक्षा या प्रलोभन ही बाकी था। कहते हैं कि पाप करके आदम ने वाटिका को जंगल बना दिया था, परन्तु यीशु ने पाप का सामना करके जंगल को वाटिका में बदल दिया।

(2) *विरोधी:* पहला, जिसे अभी-अभी बपतिस्मा लेने के बाद परमेश्वर ने अपने पुत्र के रूप में माना था, वह यीशु था। वह अपनी सेवकाई आरम्भ करने के लिए तैयार होकर पानी से बाहर आया था। दूसरा, वहां शैतान था। जंगल के अनुभव में यीशु का सामना आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात इस संसार के ईश्वर, अन्धकार के हाकिम से हुआ (2 कुरिन्थियों 4:4; इफिसियों 2:2; 6:12)।

(3) *महत्व:* यह संयोग अचानक अर्थात "अकस्मात" ही नहीं था। मत्ती 4:1 कहता है, "तब उस समय *आत्मा* यीशु को जंगल में *ले गया* कि इब्लीस से उसकी परीक्षा हो।" एक ईश्वरीय योजना अंजाम दी जा रही थी। शायद इस तथ्य से कि शैतान को इस मुकाबले के लिए सामने आना पड़ा था, अधिक कोई बात स्पष्ट नहीं है। शैतान को इस तरह सामने आकर लड़ना पसन्द नहीं है। उसे पीछे बैठकर, किसी कार्यकर्ता के द्वारा काम करना अच्छा लगता है। परन्तु यीशु के साथ उसे आमने-सामने आना पड़ा, ताकि परमेश्वर के उद्देश्य पूरे हो सकें।

परीक्षा का अध्ययन करने से मिले लाभों में से एक इस तथ्य से मिलता है कि शैतान को खुलकर सामने आना पड़ा *था*। इस तरह उसके ढंग और लक्ष्य बेनकाब हो गए थे। यीशु की तीन परीक्षाओं का अध्ययन करते हुए, शैतान की चतुराई को ध्यान में रखें। वह हज़ारों सालों से लोगों को धोखा देता आया था। लाखों अनुभवों से प्राप्त हुआ उसका कौशल मसीह को हटाने के लिए है।

पहली परीक्षा (4:1-4)

शैतान ने मसीह के सामने पहली परीक्षा शारीरिक ही रखी।

शैतान (आयतें 1–3)

> ... आत्मा यीशु को जंगल में[4] ले गया कि इब्लीस से उसकी परीक्षा हो। वह चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहा,[5] अन्त में उसे भूख लगी। तब परखने वाले ने पास आकर ... (आयतें 1–3क)।

पहली परीक्षा में शैतान का उद्देश्य परमेश्वर के प्रति मसीह की वफ़ादारी को परखना था। उसने यीशु को चुनौती दी: ''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं'' (आयत 3ख)। चालीस दिन पहले ही, स्वर्ग से एक आकाशवाणी हुई थी, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं'' (मत्ती 3:17)। अब, वास्तव में शैतान ने कहा कि ''यदि वह आकाशवाणी सत्य थी, कि तू सचमुच परमेश्वर का पुत्र है, तो तू भूखा क्यों है? बिना अधिकार के पदवी का क्या लाभ?'' शैतान के कहने का अर्थ यह था कि यीशु जंगल के पत्थरों को रोटियां बनाकर दो उद्देश्य हासिल कर सकता है: वह (भूख की अपनी) जायज़ ज़रूरत को पूरा कर सकता था, और साथ ही वह अपने आप को पुत्र साबित कर सकता था।

मैं यीशु की जगह होता तो मेरा उत्तर शायद यह होता ''हे शैतान, मैं तुझे अभी दिखा देता हूं!'' मैं तो उन पत्थरों की रोटियां बना देता। किसी की चुनौती मिलने पर पीठ दिखाना मुझे अच्छा नहीं लगता। आप भी मेरे जैसे ही होंगे।

मसीह (आयत 4)

मसीह शैतान की चाल समझ गया[6] और ''उस ने उत्तर दिया, लिखा है'' (आयत 4क)। परीक्षा के विरुद्ध यीशु का हथियार परमेश्वर का वचन था। भजन लिखने वाले ने कहा था, ''मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं'' (भजन संहिता 119:11)। परीक्षा से हार मानने से बचने का सबसे अच्छा उपाय अपने मन को वचन से भर लेना है!

इस परीक्षा का सामना करने के लिए उपयुक्त पद व्यवस्थाविवरण 8:3 में मिलता है। यीशु ने इसे उद्धृत करते हुए कहा, ''मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा'' (आयत 4ख)। पहले, ''मनुष्य'' पर चिह्न लगा लें: ''*मनुष्य* केवल रोटी ही से नहीं ... जीवित रहेगा।'' जंगल में चालीस दिन मुख्यत: यीशु के ईश्वरीय होने की नहीं, बल्कि उसके मनुष्य होने की परीक्षा थी। उसका उद्देश्य यह सिद्ध करना नहीं था कि वह परमेश्वर है, बल्कि यह दिखाना था कि वह परमेश्वर की प्रकट की गई इच्छा के साथ पूरी तरह से रह रहा सिद्ध मनुष्य था।

फिर, "रोटी" और "हर एक वचन जो परमेश्वर के मुख से निकलता है" शज़्दों में अन्तर देखें। यीशु रोटी और परमेश्वर की इच्छा में से एक को चुन सकता था। इस अवसर पर, स्पष्टतया यह परमेश्वर की इच्छा थी कि वह भूखा रहे ताकि वह उस इच्छा के दायरे में बना रहे।

यीशु ने पहली परीक्षा पास कर ली थी।

दूसरी परीक्षा (4:5-7)

दूसरी परीक्षा आत्मिक परीक्षा थी।

शैतान (आयतें 5, 6)

शैतान इतनी आसानी से हार नहीं मानता। अगली परीक्षा के लिए, उसने बड़ी सावधानी से स्थान का चयन किया। वह मसीह को "पवित्र नगर" यरूशलेम में ले गया (आयत 5क), जो यहूदियों के लिए और यीशु के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान था (भजन संहिता 48:2; 137:5; मज़्ती 23:37)। फिर वह उसे उस नगर के सबसे पवित्र स्थान, मन्दिर में ले गया। अन्त में, वह उसे उस भवन के सबसे प्रसिद्ध स्थान पर ले गया। बाइबल बताती है कि उसने उसे "मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया" (आयत 5ख)। मन्दिर में कंगूरे जैसी कोई चीज़ नहीं थी, इसलिए सज़्भवतया इसका अर्थ यह है कि वह यीशु को मन्दिर के सबसे ऊंचे स्थान पर ले गया, जो दक्षिणी भाग में होगा। यहां से नीचे मन्दिर के प्रांगण को देखा जा सकता था और दूर तक फैले हुए नगर का सर्वेक्षण किया जा सकता था। यह एक भव्य और निर्णायक लाभ की स्थिति थी।

ऊंचे टीले पर यीशु के पास खड़े, शैतान ने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे, ज़्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे" (आयत 6)।

यह कहकर शैतान परमेश्वर में मसीह के भरोसे की परीक्षा ले रहा था। अन्य शज़्दों में, वह कह रहा था, "तुझे परमेश्वर पर भरोसा है, है न? चल देखते हैं कि तू परमेश्वर में *कितना* भरोसा रखता है। ज़्या तुझे परमेश्वर पर इतना भरोसा है कि तू अपने आप को इस कंगूरे से नीचे गिरा सके?" वास्तव में, उसने यीशु से कहा था, "तू ने पवित्र शास्त्र का हवाला दिया है। मैं भी थोड़ा बहुत वचन को जानता हूं। सुन। ...।" उसने भजन संहिता 91:11, 12 से उद्धृत किया। भजन संहिता 91 परमेश्वर पर भरोसा रखने के बारे में है। पहली आयत कहती है, "जो परम प्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशज़्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।"

यह कितनी जटिल परीक्षा थी और है! इसमें यह सुझाव है कि भरोसा असाधारण काम को करने के प्रयास से जो साहसिक, बल्कि खतरनाक हो, व्यज़्त किया जाता है।

मसीह (आयत 7)

शैतान ने ''आत्मा की तलवार'' (इफिसियों 6:17) चलाने का प्रयास किया, परन्तु यीशु ने अपने आप को उससे अच्छा तलवारबाज़ साबित किया। ''यीशु ने उससे कहा, यह भी लिखा है'' (आयत 7क)। अन्य शब्दों में, ''शैतान, तू ने पवित्र शास्त्र का एक हवाला दिया है, पर इस विषय पर पवित्र शास्त्र की केवल एक आयत से बात नहीं बनेगी। इस विषय पर बाइबल जो कुछ कहती है, उस *सब* को भी शामिल करना आवश्यक है।'' ज़्यादातर गलती पवित्र शास्त्र को अलग करके और उसी विषय पर उससे सम्बन्धित दूसरी आयतों पर विचार न करने से होती है।[7]

फिर यीशु ने व्यवस्थाविवरण 6:16 से उद्धृत किया: ''तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर'' (आयत 7ख)। मसीह के उत्तर को गलत न समझें। उसने अपने आप को परमेश्वर बताते हुए नहीं कहा कि ''*मेरी* परीक्षा करना गलत है।'' (ध्यान रखें कि वह परमेश्वर के रूप में नहीं, बल्कि सिद्ध मनुष्य के रूप में परीक्षाएं दे रहा था।) इसके विपरीत, उसने कहा कि उसके लिए *परमेश्वर* की परीक्षा करना गलत होगा।

शैतान ने कहा था कि मन्दिर के कंगूरे से कूदने से यह पता चल जाएगा कि यीशु को सचमुच परमेश्वर पर *भरोसा* है; लेकिन यीशु ने कहा कि इससे तो यह संदेश जाएगा कि वह परमेश्वर की *परीक्षा कर रहा* है। वास्तव में इससे यह लगता कि उसे परमेश्वर पर भरोसा *नहीं* है। यदि हम किसी पर भरोसा रखते हैं, तो हमें उसकी परीक्षा लेने की आवश्यकता नहीं होती। उस व्यक्ति पर हमारा विश्वास डगमगाने से ही उसकी परीक्षा करने का विचार मन में आएगा।

परमेश्वर में भरोसा जीवन की किसी भी बात का सामना करने के लिए उसकी सहायता पर हमारी निर्भरता में दिखाया जाता है। यह उसके सामने रखी हमारी बनावटी परीक्षाओं में व्यक्त *नहीं* किया जाता।

एक बार फिर, यीशु ने अपने आप को सिद्धांत से चलने वाला एक मनुष्य दिखाया जो अपने मन में परमेश्वर की इच्छा में बने रहने को दृढ़ संकल्प था। उसने दूसरी परीक्षा भी पास कर ली।

तीसरी परीक्षा (4:8-10)

तीसरी परीक्षा सबसे कठिन थी, क्योंकि इसमें यीशु के मिशन की परीक्षा थी या और स्पष्ट कहें तो यह किसी भी कीमत पर यीशु द्वारा अपने उद्देश्य को पूरा करने के संकल्प की परीक्षा थी। दास को नष्ट करने में असफल होने के बाद शैतान ने उसकी सेवा को नष्ट करने की कोशिश करनी थी।

शैतान (आयतें 8, 9)

यह परीक्षा सबसे स्पष्ट थी। पहली दो परीक्षाओं में यीशु ने शैतान की दुष्ट चालों को बेनकाब किया था और उसके असली दुष्ट उद्देश्यों को दिखाया था। तीसरी परीक्षा में, शैतान

ने परोक्ष ढंगों का इस्तेमाल करना बन्द कर दिया। उसने जान-बूझकर सीधे तौर पर चुनौती देते हुए मसीह को अपने सामने झुकने के लिए कहा।

"फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया[8] और सारे जगत के राज्य और उनका विभव दिखाया" (आयत 8)। संसार के सभी राज्यों का, जिसमें वर्तमान और भूतकाल के सभी साम्राज्य हों, जैसे महान रोमी साम्राज्य, यूनान, फ़ारस, बाबुल, अश्शूर, मिस्र, दाऊद और सुलैमान का राज्य, की कल्पना करने की कोशिश करें-कहने की आवश्यकता नहीं कि बितूनिया और सीरिया के साथ उन देशों के राज्य भी होंगे, जिनकी खोज नहीं हुई है! यीशु को सब राज्य लाए गए थे।

फिर शैतान ने कहा, "यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा" (आयत 9)। कहने का अर्थ यह है कि शैतान ने यह सब देना था (देखें लूका 4:6)-और इस बात से यीशु ने इनकार नहीं किया। यदि यह पेशकश झूठी होती,[9] तो परीक्षा की तो कोई बात ही नहीं थीं। यीशु के समय में भी आज की तरह ही संसार के राज्यों पर शैतान का प्रभाव था। वे उसके सामने झुक गए थे; वे उसकी आज्ञाओं को मानते थे; वे उसकी इच्छा के अधीन थे। बाद में यीशु ने उसे "इस जगत का सरदार" कहा (यूहन्ना 12:31)।[10]

मैंने पहले ही सुझाव दिया है कि यह यीशु के मिशन की एक परीक्षा थी। शैतान यह सुझाव दे रहा था कि मसीह बिना दुख सहे और मृत्यु के *लगभग* ऐसा ही कुछ पा सकता है।[11] उसने इसे एक ईश्वरीय लक्ष्य को पाने शॉर्टकट बताया। मरने के बजाय झुक जाना कितना आसान होना था!

यीशु के लिए परीक्षा का अर्थ शैतान की चतुराई भरी गहरी समझ से कहीं अधिक होगा। उस भयानकता को, जो मसीह पर आने वाली थी, समझने के लिए गतसमनी के बाग में उसे अपने पिता के सामने गिड़गिड़ाते हुए देखें। जब उसके माथे से पसीना गिर रहा था: "हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए" (मत्ती 26:39)। उसे क्रूस पर यह पुकारते हुए देखें, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (27:46)। यकीन मानें, यह सचमुच की परीक्षा थी।

अन्त में, शैतान द्वारा मसीह का अनुमान लगाना देखें। उसने यीशु को उन सभी राज्यों से अधिक माना, जो उसने प्राप्त किए थे। कुछ लोग इस बात पर विश्वास नहीं करते कि यीशु की मृत्यु सबके लिए पर्याप्त हो सकती है, परन्तु शैतान ने उसके वास्तविक महत्व को समझ लिया था।

मसीह (आयत 10)

शैतान को उज़्र देते हुए, पहली बार यीशु ने अपने अधिकारपूर्ण भाषा का इस्तेमाल किया। यीशु को यह अधिकार पिछले आक्रमणों में प्राप्त की गई जीत से मिला था।

पहले तो मसीह ने परीक्षा करने वाले को सीधी आज्ञा दी: "हे शैतान दूर हो जा" (आयत 10क)। फिर यीशु ने व्यवस्थाविवरण 6:13 से उद्धृत करते हुए दोबारा आत्मा की तलवार चलाई: "क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल

उसी की उपासना कर'' (आयत 10ख)। मसीह के शब्दों से इस परीक्षा की चतुराई सामने आ गई। वास्तव में शैतान के कहने का अर्थ था, ''मेरी उपासना कर और मैं *तुझे* इन राज्यों का प्रभु बना दूंगा।'' मसीह ने इस बात पर ध्यान दिलाया कि *आराधना* और *दास होने* को अलग नहीं किया जा सकता। बिना शैतान का दास बने वह उसकी आराधना नहीं कर सकता था। शैतान उसे संसार के राज्यों का कठपुतली शासक बना सकता था, परन्तु वास्तव में उसके हाथ कुछ नहीं होना था। नियन्त्रण तो शैतान के ही हाथ में ही रहना था।

यीशु फिर, अपने मन में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के प्रति दृढ़ रहा। वह अपने के राज्य की स्थापना करने के लिए क्रूस पर जाने को तैयार था।

मसीह के उज़र ने यह दिखा दिया कि परमेश्वर के प्रतिफल अन्ततः शैतान के प्रतिफल से अच्छे होते हैं। शैतान उन प्रतिफलों को *मोहक* बना सकता है, जैसा यीशु को संसार के राज्यों का वैभव दिखाने से पता चलता है। लूका द्वारा दिए गए परीक्षा के इस वृज़ांत में कई बातें स्पष्ट होती हैं: शैतान ने यीशु को ''पल भर में'' संसार के राज्य दिखा दिए (लूका 4:5)। इससे अधिक समय तक दिखाने से उन राज्यों की व्यर्थता या निकज़्मेपन का पता चल जाना था। उनका वैभव सोने का नहीं, बल्कि पन्नी चढ़ा[12] था। जैसे यूहन्ना ने कहा है, ''संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं'' (1 यूहन्ना 2:17क)।

सारांश (4:11)

यीशु से डांट और उज़र मिलने के बाद, शैतान खामोश था, जो उसकी हार का सबूत है। आयत 11 कहती है, ''तब शैतान उसके पास से चला गया।...'' कई साल पहले, टी. बी. लैरीमोर ने परीक्षा पर वचन सुनाया था। उसका विवरण इतना स्पष्ट था कि ''शैतान उसके पास से चला गया'' की बात कहने पर सुनने वालों ने मिलकर आह भरी थी।

परन्तु लूका के वृज़ांत में यह भी जोड़ा गया है कि ''जब शैतान सब परीक्षा कर चुका, तब *कुछ* समय के लिए उसके पास से चला गया'' (लूका 4:13)। अपने अध्ययन में, हम आगे देखेंगे कि किस प्रकार शैतान मसीह की परीक्षा करने की कोशिश करता रहा: भीड़ ने उसे सांसारिक राजा का मुकुट पहनाने की कोशिश की (यूहन्ना 6:15); लोग लगातार उससे चिह्न मांगते रहते थे (लूका 11:29); उसके अपने एक चेले ने उसे क्रूस पर जाने से हतोत्साहित करने की कोशिश की (लूका 16:21-23)। फिर भी इसके बाद यीशु ने शैतान और उसके भेजे हुओं के साथ ऐसे बात की, जैसे मालिक नौकरों से करता है। उसने विजय पा ली थी।

जंगल से मसीह अपनी सेवकाई के लिए तैयार होकर आया। लूका 4:14क हमें बताता है कि ''फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा'' (लूका 4:14)। परीक्षा से वह अपने क्रूसारोहण के लिए भी तैयार होकर आया। वह परमेश्वर का निष्पाप पुत्र, ''निर्दोष और निष्कलंक मेमना'' बना रहा (1 पतरस 1:19)।

यीशु की परीक्षा की इस कहानी में हमारे लिए कई व्यावहारिक सबक हैं। इस कहानी में ज़ोर दिया गया है कि परीक्षा की तैयारी करने के लिए परमेश्वर के वचन को सीखना

और याद करना आवश्यक है। याकूब 4:7ख से भी यही सच्चाई पता चलती है: "शैतान का साज्हना करो, तो वह तुज्हारे पास से भाग निकलेगा।" सबसे मूल्यवान संदेशों में से एक यह है कि हम पर आने वाली परीक्षा को यीशु जानता है और उसे हमारे साथ सहानुभूति होती है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है,

> ज्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे (इब्रानियों 4:15, 16)।

परमेश्वर की सहायता से, हम भी, शैतान पर विजय पा सकते हैं![13]

नोट्स

विज़ुअल-एड के रूप में आप "यीशु की परीक्षा" पर चार्ट का इस्तेमाल कर सकते हैं। बोर्ड पर जंगल में शैतान से हमारे प्रभु का सामना करने का चित्र बनाकर इसे दिखाया जा सकता है।

बाईं ओर का कॉलम शैतान द्वारा ली परीक्षा को दिखाता है। जबकि दाईं ओर का कॉलम उस के उज़र को दिखाता है। पाठ के अन्त में, मैं बोर्ड के ऊपर के पीसों की जगह, यीशु की ओर ध्यान दिलाते हुए "विजयी!" शज़्द लगा देता हूं। इस विज़ुअल प्रस्तुति का इस्तेमाल प्रोजेज़्टर के साथ किया जा सकता है। इसे चाक से बोर्ड पर या कागज़ या कार्ड-बोर्ड पर बनाया जा सकता है।

छात्रों को, विशेषकर छोटे बच्चों को, सींग और पूंछ वाला शैतान प्रभावित करता है। मैंने कपड़े पर लचकदार (बिना घुंडियों वाली कीलें लगाकर) शैतान की आकृति बनाई थी, ताकि अन्त में उसकी स्थिति ऐसी हो सके, जिससे वह हारा हुआ दिखाई दे, जैसा कि चार्ट के नीचे रेखाचित्र में दिखाया गया है। निश्चय ही, शैतान हमारे सामने सींग और लज़्बी धारीधार पूंछ लगाकर नहीं आता। यदि आप शैतान को ऐसे चित्र से नहीं दिखाना चाहते, तो उसकी उपस्थिति अन्धकार, अस्पष्ट आकार में दिखा सकते हैं।

जहां आप रहते हैं, वहां यदि उपयुज़्त हो तो आप इस पाठ को "मसीह बनाम शैतान" का नाम देकर इस्तेमाल कर सकते हैं: "मेरे लिए यह मुकाबला हमेशा 'मसीह बनाम शैतान' के बॉज़्सिंग मैच की तरह ही है। शैतान एक मुज़्का मारता है और यीशु उसे रोककर जवाब में ज़बर्दस्त मुज़्का मारता है। इसी तरह शैतान को दूसरे, तीसरे मुज़्के का जवाब मिलता है। मुज़्केबाज़ों द्वारा पहने जाने वाले सफ़ेद और काले वस्त्र भी 'अच्छाई बनाम बुराई' को दर्शाने के लिए उपयुज़्त होंगे। इसके आत्मिक महत्व के अलावा, इस मेल में चैंपियनशिप की लड़ाई का रोमांच है, जो कि वास्तव में है।"

टिप्पणियां

[1]इस पाठ की अधिकांश सामग्री जी. कैज़्पबैल मौर्गन, *द क्राइसस ऑफ़ द क्राइस्ट* (न्यूयॉर्क: ज़्लेमिंग एच. रेवल कं., 1936), 162–99 से ली गई है। [2]परीक्षा पर इससे पहला पाठ "निकट आया" देखें। [3]मरकुस 1:13 हमें बताता है कि यीशु के एकमात्र साथी "वन पशु" थे। [4]हमें यह नहीं बताया गया कि यह जंगल कहां था। यह यहूदिया का जंगल हो सकता है, जहां यूहन्ना को तैयार किया गया था और जहां उसने काफी काम किया था (मत्ती 3:1, 3; 11:7; लूका 1:80; 3:1, 2)। "मसीह के जीवन के दौरान पलिश्तीन" का मानचित्र देखें। [5]आधुनिक समयों में यह दिखाया गया है कि कुछ लोग पानी पीकर चालीस दिन तक बिना भोजन खाए रह सकते हैं। [6]परीक्षा का अध्ययन करने का एक बड़ा लाभ हर परीक्षा का विश्लेषण करने का प्रयास करना है कि यह गलत *ज़्यों* था और मसीह ने इसका सामना कैसे किया। कुछ लोगों का विचार है कि शैतान के सुझाव केवल इसलिए गलत थे, ज़्योंकि वे शैतान के थे, जिस कारण वे इस पर विचार करने की आवश्यकता ही नहीं लगती। यदि शैतान हमारे सामने लाल सूट पहनकर सींग और धारीदार पूंछ लगाकर आ जाए तो हमें उसे पहचानने में समय नहीं लगेगा। हम उसकी परीक्षा का उज़्र दे सकते हैं कि "यह गलत है ज़्योंकि यह शैतान का सुझाव है।" अफसोस कि वह हमारे पास "ज्योतिर्मय स्वर्गदूत" के रूप में आता है (2 कुरिन्थियों 11:14)। यदि हम यह नहीं समझते हैं कि कोई विशेष परीक्षा गलत *ज़्यों* है, तो वह हमें आसानी से गुमराह कर सकता है। [7]आप इस शज़्द की किसी और बुराई के कुछ उदाहरण दे सकते हैं। [8]परज़्परा के अनुसार परीक्षा का स्थान ताबोर पहाड़ ही था ("मसीह के जीवन के दौरान पलिश्तीन" का मानचित्र देखें), परन्तु बाइबल यह नहीं बताती कि यह यही पहाड़ था। [9]कुछ लोगों का विश्वास है कि परीक्षा में छल था अर्थात "शैतान ने वह प्रतिज्ञा की, जो वह दे नहीं सकता था।" ऐसी परीक्षा मेरे और आप जैसे लोगों पर तो असर कर सकती है , परन्तु निश्चय ही यीशु पर नहीं, जिसे आत्मिक संसार का पूरा ज्ञान था। [10]2 कुरिन्थियों 4:4 में पौलुस ने ऐसी ही अभिव्यज़्ति का इस्तेमाल किया। यह समझाया जाना चाहिए कि *अन्त में* नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में ही है और शैतान के पास जो भी शज़्ति है, उसकी *अनुमति* उसी ने दी हुई है। परमेश्वर शैतान की गतिविधियों को सीमित करता है–परन्तु इस पर चर्चा इस पाठ के क्षेत्र से बाहर है (उस विषय को अधिक समझने के लिए, अय्यूब की पुस्तक के पहले दो अध्याय पढ़ें।) अभी सुनने वालों के लिए यही समझाना काफी है कि तीसरी परीक्षा एक वास्तविक परीक्षा थी।

[11]हम समझते हैं कि यदि यीशु न मरता तो आपका और मेरा उद्धार न हो पाता (इब्रानियों 9:22; इफिसियों 1:7)–परन्तु शैतान वास्तव में यीशु को दूसरों को भूलकर केवल अपने बारे में सोचने के लिए कह रहा था (जैसे उसने, अर्थात शैतान ने सोचा था)। मसीह जन्म से राजा था, और शैतान ने उसे मुकुट पहनाने की पेशकश की और सारी मनुष्य जाति की निष्ठा का आश्वासन दिया। [12]पन्नी विशेष अवसरों के लिए सजावट में इस्तेमाल की जाने वाली सस्ती, चमकदार सामग्री होती है। अवसर के बाद, वह पन्नी उतारकर फैंक दी जाती है। [13]इस प्रवचन का इस्तेमाल करते समय, आपको यह समझाना चाहिए कि परमेश्वर की सहायता चाहने वाले का उसके साथ सही सज़्बन्ध होना आवश्यक है। पहले, भरोसे और आज्ञापालन के द्वारा परमेश्वर की सन्तान बनना आवश्यक है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। फिर उसके साथ सही सज़्बन्ध में *बने रहना* आवश्यक है। याकूब 4:7 का अर्थ है कि "शैतान का सामना" करने से पहले, हमें "परमेश्वर के साज़्हने झुकना" आवश्यक है।

यीशु की परीक्षा

मत्ती 4:1-11

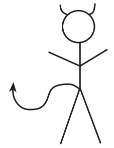

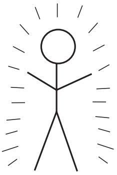

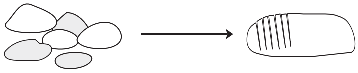

''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं'' (आयत 3)।

''लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से, जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा'' (आयत 4)।

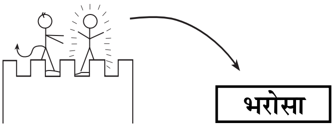

''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है, ...'' (आयत 6)।

भरोसा **बनाम** **परीक्षा**

''यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर'' (आयत 7)।

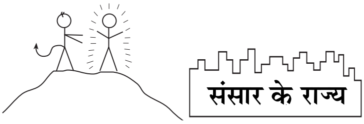

''यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा'' (आयत 9)।

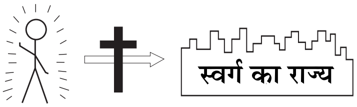

''हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर'' (आयत 10)।

(प्रस्तुति के अन्त में सबसे ऊपर वाले रेखाचित्र को इस प्रकार दिखाएं।)